कृषि कुंभ
हिंदी मासिक पत्रिका

खण्ड 03 भाग 09, (फरवरी, 2024)
पृष्ठ संख्या 15–16

थाई एप्पल बेर की खेती किसानों की आय दुगनी करने का सुगम रास्ता

कुमारी मधुमाला[1], करनजीव कुमार[2], गौतम कुणाल[3] एवं सुमन कुमारी[4]

[1]उद्यान विभाग, वीर कुंवर सिंह कृषि महाविद्यालय, डुमरांव, बक्सर
[2]उद्यान विभाग, डॉ. कलाम कृषि महाविद्यालय, किसनगंज
[3]कीट विज्ञान, वीर कुंवर सिंह कृषि महाविद्यालय, डुमरांव, बक्सर
[4]उद्यान विभाग, विषय वस्तु विशेषज्ञ, कृषि विज्ञान केंद्र, अररिया, (उ०प्र०) भारत।

Email Id: madhukumariroy@gmail.com

भारत में विदेशी फलों की खेती का प्रचलन इन दिनों देसी फलों की तुलना में काफी बढ़ गई है। चाहे वह स्ट्रॉबेरी (*फ्रगेरिया अनानासा*) हो या ड्रैगन फ्रूट (*ह्यलोसेरोउस उंडाउट्स*), लोग ज्यादा कीमतों पर भी इन फलों का फायदा लेते है। ऐसे ही विदेशी फलों में सामिल है थाई एप्पल, बेर (*जिजिफस मौरिसिआना*), जो दिखने में सेब और स्वाद में बेर की तरह होता है। थाई एप्पल बेर की एक फल का वजन 4 ग्राम से लेकर 120 ग्राम तक का हो सकता है। यह थाईलैंड का फल है, जिसकी बागवानी करना बेहद आसान है। बता दें की थाई एप्पल बेर में गजब की रोग प्रतिरोधी क्षमता होती है, जिसके चलते फलों में कीट और रोगों का खतरा कम ही होती है।

एप्पल बेर फल थाईलैंड की किस्म का फल है। इसे भारतीय बेर या चीनी खजूर के नाम से भी जानते है। इस फल में विटामीन सी, ए, बी और शर्करा के साथ–साथ खनिज पदार्थ जैसे जिंक, कैल्शियम आदि लाभदायक खनिज पदार्थ होते है। इसकी खेती करना बेहद आसान है। किसान चाहें तो 50 से 60 हजार की शुरूआती लागत इसके पेड़ से साल लगभग 100 किलो तक उत्पादन ले सकते हैं। बता दें कि बाजार में इसकी मांग तो काफी अधिक होने के कारण थाई एप्पल बेर काफी महंगे बेचे जाते हैं।

मृदा चयन

थाई एप्पल बेर के लिए कार्बनिक पदार्थों वाली कंपोस्ट सबसे अच्छी होती है। इसकी खेती के लिए आदर्श पीएच सीमा 6.0 से 7.0 के बीच होती है। इस फल को लवणीय मिट्टी में भी लगाकर ठीक–ठाक उत्पादन लिया जा सकता है।

खेत की तैयारी

इसके लिए खेत की जुताई करके प्रति पौधा के हिसाब से 5 मी0 दूरी पर 2–2 फीट लंबाई–चौड़ाई वाले वर्गीकार गढ्ढ़ों की खुदाई की जाती है इन गढ्ढ़ों में 25 दिन तक सौरीकरण होता है। जिसके बाद 20 से 25 किलो अच्छी सड़ी हुई कंपोस्ट खाद, नीम की पत्तियां, नीम की खली और कुछ पोषक तत्व मिलाकर गढ्ढ़ों में भर दिये जाते हैं।

पौधे की रोपाई

थाई एप्पल बेर की खेती के लिए कालि–कायन विधि का इस्तेमाल करके पौधे को तैयार किये जाते हैं। इसके बाद जुलाई से लेकर मार्च तक के बीच थाई एप्पल बेर के पौधों की रोपाई का काम करते हैं। इसके लिए1 बीघा खेत में 15 फीट की दूरी के हिसाब से थाई एप्पल बेर के 80 पौधों की रोपाई कर सकते हैं। किसान चाहे तो थाई एप्पल बेर के बीच खाली पड़े स्थान पर बैंगन, मिर्च, मटर और मूंग जैसी फसलों की खेती भी कर सकते हैं। इस

तरह उत्पादन मिलने से पहले बीच–बीच में खेती की लागत निकाल सकेत है।

पोषण प्रबंधन

वैसे तो थाई एप्पल बेर कम उपजाऊ मिट्टी में भी अच्छा उत्पादन दे सकता है, लेकिन मिट्टी की जाँच के आधार पर देशी खाद, सुपर खाद, सुपर फॉस्फेट, म्यूरेट ऑफ पोटाष के अलावा नाईट्रोजन उर्वरकों का भी प्रयोग कर सकते हैं। बेर के पौधों की जड़ों में ड्रिप सिंचाई के जरिये पोषक तत्वों की आपूर्ति करके काफी खर्च बचा सकते हैं। इसकी खेती के लिए जीवामृत की मद्द से भी पोषण प्रबंधन का काम कर सकते हैं।

थाई एप्पल बेर का उत्पादन

थाई एप्पल बेर की खेती करने के लिए देसी और हाईब्रीड (हाईब्रीड थाई एप्पल बेर) प्रजातियों का इस्तेमाल कर सकते हैं। इस फल की हाईब्रिड प्रजातियों के पौधों की रोपाई करके मात्र 6 महीने के अंदर छः सौ किलो तक फलों का उत्पादन ले सकते हैं। इसकी रोपाई के साल भर बाद पौधे के परिपक्व होने पर 20 से 25 किलो तक फलों का उत्पादन मिल जाता है। बाजार में थाई एप्पल बेर को रू 50 प्रति किलो भाव पर बेचा जा सकता है। किसान चाहे तो अगले 50 साल तक थाई एप्पल बेर की फसल से बंपर उत्पादन लेकर अच्छा मुनाफा कमा सकते है।

उन्नत किस्में

थाई एप्पल बेर, सेब बेर, कैथली, कष्मीरी एप्पल बेर, छुहारा, दण्डन मुण्डिया।

कीट व रोग

एप्पल बेर में पाये जाने वाले कुछ प्रमुख कीटों में फल मक्खी, फल छेदक, पत्ती खाने वाले सुंडी, मीलीबग, स्केल कीट और थ्रिप्स है। कीटनाषकों के प्रयोग के अलावा स्वस्थ रोपण सामग्री का चयन और उचित अंतर सांस्कृतिक संचालन कीटों को नियंत्रित करने में प्रभावी होते हैं। थाई एप्पल बेर में मुख्य रूप में खस्ता फफूंदी, लीफ स्पॉट, रस्ट और ब्लैक स्पॉट रोग हैं। अधिकांष मामलों में संक्रमण के प्रकार के आधार पर कवच या मैनकोजोल (2 ग्राम/ली0) आदि का प्रयोग प्रभावी होता है।

फलों की तुड़ाई

थाई एप्पल बेर फूल आने के 150–175 दिन बाद पकती है। सेब की फसल की कटाई पूर्व 750 पीपीएमध्2 कलोरी इथाइल फास्फोटिक एसिड या एपिफोन जल्दी परिपक्वता को प्रेरित करता है। पूरी तरह से परिपक्व फलों की तुड़ाई की जाती है जो आमतौर पर पूर्वाह्न में किया जाता है।

आमतौर पर एप्पल बेर के फलों की पौधों की कटाई और छटाई दिसम्बर में शुरू होती है। एक साल पुराने पौधों में फलों की संख्या 350 से 650 तक होती है और फलों का वनज 35–55 ग्राम के बीच होती है। फलों की संख्या और पौधों की उम्र के नियमन के साथ बेर फल और आकार बढ़ सकता है। दक्षिणी भारत में एप्पल बेर की कटाई का समय अक्टुबर–नवम्बर, गुजरात में दिसम्बर–मार्च, राजस्थान में जनवरी–मार्च और उत्तर भारत में फरवरी–अप्रैल के दौरान होता है।

ग्रेडिंग

एप्पल बेर के फलों को उनके आकार के आधार पर बड़े, मध्यम और छोटे आकार में वर्गीकृत किया जाता है। क्षतिग्रस्त, अधिक पक्के, कच्चे फलों को आमतौर पर फेंक दिया जाता है।

भण्डारण

कटाई के तुरंत बाद फलों को 100 डिग्री सेल्सियस पर प्री–कुलिंग करने से सेल्फ जीवन लगभग तीन दिनों तक बढ जाता है, जब बाद में कमरे के तापमान पर संग्रहित किया जाता है। एप्पल बेर का भंडारण जीवन 30 डिग्री सेल्सियस और 85–90 प्रतिशत सापेक्ष आर्द्रता पर संग्रहित करने पर 30 से 40 दिनों तक बढ़या जा सकता है।